

मौत से बचे मगर बीमार हुए

हाल में प्रकाशित एक अध्ययन बताता है कि मनुष्य की औसत आयु लगातार बढ़ती गई है और आयु बढ़ने के साथ-साथ मनुष्य ज़्यादा बीमार हुए हैं। यह अध्ययन वॉशिंगटन विश्वविद्यालय के थियो वॉस ने किया है। अध्ययन के मुताबिक करीब 95 प्रतिशत लोग कम से कम एक स्वास्थ्य समस्या से पीड़ित हैं। अर्थात् मृत्यु को टालकर हमने बीमारियों और अपंगताओं को ज़्यादा मौका दिया है।

वॉस ने यह अध्ययन 1990 से 2013 के बीच 188 देशों के स्वास्थ्य सम्बंधी आंकड़ों के आधार पर किया है। उन्होंने यह आकलन करने की कोशिश की कि 24 वर्षों की इस अवधि में बीमारियों और अस्वस्थता का पैटर्न किस तरह बदला है। उनका कहना है कि पिछले वर्षों में हमारा पूरा ध्यान मृत्यु के कारणों से निपटने पर रहा है, न कि अपंगता से निपटने पर।

वॉस व साथियों ने गणना की है कि विश्व के स्तर पर स्वस्थ जीवन के कितने वर्ष गंवा दिए गए। उनकी गणना के मुताबिक 1990 में 53.76 करोड़ स्वस्थ जीवन वर्षों का नुकसान हुआ और 2013 में यह आंकड़ा बढ़कर 76.48 करोड़ हो गया। वॉस के दल का मत है कि स्वस्थ वर्षों के ह्रास में यह वृद्धि मूलतः जनसंख्या वृद्धि और बुढ़ापे के कारण हुई है। उनके मुताबिक स्वस्थ जीवन में ह्रास के प्रमुख कारणों में कमर दर्द और अवसाद शामिल हैं। अन्य कारणों में दांतों की केविटीज़, तनाव वाले सिरदर्द, एनीमिया,

सुनने में दिक्कत, यौनांग का हर्पीज़ व माइग्रेन शामिल हैं।

इस अवधि के आंकड़ों से जो पैटर्न उभरता है, उसके अनुसार संक्रामक रोगों का प्रकोप कम हो रहा है। संक्रामक रोगों में सबसे ऊपर दस्त सम्बंधी रोग थे। समस्त रोगों में दस्त का नंबर 1990 में 15वां था और 2013 में गिरकर 25 पर आ गया था। संक्रामक रोगों की बजाय घटिया जीवन शैली, मोटापे और बुढ़ापे के रोगों में इज़ाफा हुआ। मसलन, 1990 के बाद से मधुमेह के प्रकोप में 43 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

अलबत्ता, वॉस का मत है कि हम बुढ़ापे से जुड़ी बीमारियों और अपंगताओं को आजकल बेहतर ढंग से संभाल पा रहे हैं। इसका प्रमुख कारण बेहतर उपचार और स्वस्थ जीवन शैली की ओर बढ़ते कदम को माना जा सकता है। आंकड़े दर्शाते हैं कि यदि हम उम्रवार देखें तो हर नए समूह में अपंगता का स्तर कम हो रहा है हालांकि सुधार बहुत थोड़े-थोड़े ही हैं।

इस अध्ययन के आधार पर कई शोधकर्ता कह रहे हैं कि स्वास्थ्य प्रणाली में आमूल बदलाव की ज़रूरत है। बीमारी हो जाने के बाद अस्पतालों में उनका उपचार करने की बजाय हमें ज़्यादा ध्यान घर और समुदाय के स्तर पर उनकी रोकथाम पर देना चाहिए। बीमारी का इंतज़ार करने की बजाय स्वास्थ्य के रख-रखाव पर निवेश करना ज़रूरी है। (स्रोत फीचर्स)